: प्रथम अध्याय :

" अज्ञेय : व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व "

:प्रथम अध्याय :

अज्ञेय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

`अज्ञेय` सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन हिन्दी साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं। उपन्यास, कहानी, कविता, निबंध एवं संपादन कार्य में अपना समान अधिकार रहा है। अज्ञेय अपने व्यक्तिवादी लेखन के कारण हिंदी साहित्य में हमेशा विवाद का विषय रहे हैं। ऐसे विवादग्रस्त, बहुमुखी, प्रतिभासंपन्न साहित्यकार के जीवन-परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संदर्भ में मन में जिज्ञासा उत्पन्न होना कोई असाधारण बात नहीं। प्राप्त सामग्री के आधारपर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की तह तक पहुँचना ही प्रस्तुत अध्याय का मुख्य उद्देश्य है।

1.1 जीवन परिचय :-

1.1.1 जन्म :-

`अज्ञेय` यह उनका उपनाम है। इनका वास्तविक नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन है। अज्ञेय का जन्म गोरखपुर के पास देवरिया जिले के `कसिया` नामक ग्राम में सारस्वत गोत्रीय पंजाबी ब्राह्मण परिवार में 7 मार्च, 1911 ई. में हुआ था। कसिया का संस्कृत नाम `कुशीनगर` है। भगवान बुद्ध का इसी स्थान पर महानिर्वाण हुआ था। अपने उपन्यास `शेखर : एक जीवनी- भाग- 1` की भूमिका में इन्होंने स्वयं में और शेखर में अंतर किया है तथापि बाल्यकालीन अंश के विषय में उनका कथन है कि -``शिशु मानस के चित्रण की सच्चाई के लिए मैंने `शेखर` के आरंभ के खंडों में घटमास्थल अपने ही जीवन से चुने हैं।``[1] अत: शेखर की जन्म-कथा उनकी अपनी जन्म-कथा है। कसिया और भगवान बुद्ध के संकेत से युक्त उनका वर्णन इस उपन्यास में उन्होंने इस प्रकार किया है - ``जिन खंडहरों के मध्य में उसका जन्म हुआ था, वे एक बौद्ध विहार के खंडहर थे। वहीं उसी दिन गौतम बुद्ध की अस्थियों की एक मंजूषा निकली थी, जिसकी उपासना करके वे भिक्षु उसके पिता के पास अतिथि होकर आये थे। जब उन्होंने देखा की उसी दिन इस शिशु का जन्म हुआ है, तब उन्होंने हीरानंदजी से कहा -यह शिशु बुद्ध का अवतार है। इसको बौद्ध धर्म की दीक्षा देना।``[2]

1.1.2 माता-पिता :-

अज्ञेय जी के पिताजी डॉ. हीरानंद वात्सायन पुरातत्त्व विभाग में एक उच्च अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। अत: उनके साथ अज्ञेय को बचपन से ही श्रीनगर, नालंदा, पटना, लखनऊ, लाहौर, बडौदा, ऊटकमंड और मद्रास आदि स्थानों में घुमने का अवसर मिला। साथ ही अपने पिता के कारण उन्हें विद्‌वानों का संपर्क भी सर्वदा सुलभ रहा। अपने क्रांतिकारी जीवन की वजह से अज्ञेय जी हमेशा अपने कार्यों में व्यस्त रहते थे। ऐसी परिस्थिति में घर लौटने पर उन्होंने अचानक पाया कि अपना छोटा भाई और माँ की असमय मृत्यु हो गयी है। वे तब बहुत ही द्रवीभूत हुए थे। सन् 1946 में श्री. हीरानंद वात्सायन जी की गुरूदासपुर में मृत्यु हुयी।

1.1.3 शिक्षा- दीक्षा :-

अज्ञेय जी की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। इसका कारण था पाठशाला के प्रति अज्ञेय जी की अरुचि। आरंभ से ही एक विद्रोही, नियम में न बँधने का हठ उनमें था। `शेखर : एक जीवनी` में स्कूली शिक्षा संबंधी अपने विचार प्रकट किए हैं, ----``शिक्षा देना संसार अपना सबसे बड़ा कर्तव्य समझता है, किंतु शिक्षा अपने मन की, शिष्य के मन की नहीं। क्योंकि संसार का `आदर्श व्यक्ति` व्यक्ति नहीं है, एक टाइप है, और संसार चाहता है कि सर्वप्रथम अवसर पर ही प्रत्येक व्यक्ति को ठोंक पीटकर उसका व्यक्तित्व कुचलकर, उसे उस `टाइप` में संमिलित कर लिया जाए उसे मूल रचना न रहने देकर एक प्रतिनिधि मात्र बना दिया जाए।``[3] अज्ञेय जी ने सन् 1925 में हाईस्कूल और सन् 1927 में इंटमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा सन् 1929 में बी. एस्सी. की परीक्षा लाहौर (पंजाब) के फारमन कालेज से उत्तीर्ण की। इसी बीच लाहौर में उनका अमेरिकी प्रोफेसर जे. एम. बनेड एवं प्रोफेसर डेनियल से परिचय हुआ और उन्हें अँग्रेजी साहित्य, बाईबिल ज्ञान तथा रवींद्रनाथ ठाकुर के अध्ययन के लिए स्वर्णपदक प्राप्त हुआ। आगे चलकर 1929 में उन्होंने एम. ए. प्रथम वर्ष में अंग्रेजी विषय लेकर प्रवेश लिया परंतु लाहौर में उनके क्रांतिकारी जीवन का श्रीगणेशा होने से वे आगे पढ़ न सके। बाद में मौका आने पर उन्होंने विश्वविद्यालयीन शिक्षा मद्रास और लाहौर में पाई।

1.1.4 नौकरी :-

सन 1936 में अज्ञेय कर्मक्षेत्र में उतरे और कुछ समय तक आगरा से `सैनिक` का संपादन किया परंतु कुछ ही दिनों में संपादन कार्य छोड़कर मेरठ में किसान आंदोलन में काम किया। सन् 1937 में विशाल भारत (कलकत्ता) के संपादकीय विभाग में रहे लेकिन वहाँ भी लगभग डेढ़ वर्ष ही रह सके। कुछ समय तक वे पिता के पास बडौदा रहे और उनकी इच्छानुसार विदेश जाकर अध्ययन पूरा करने का कार्यक्रम बनाने लगे पर युद्ध छिड़ जाने से उनकी अभिलाषा पूर्ण न हो सकी। अत: रेडियो में कुछ समय तक नौकरी करने लगे। अज्ञेय जी सन् 1961 के सितंबर में अमरिका के कैलिफोर्नियाँ में `भारतीय संस्कृति और साहित्य` के अध्यापक की नौकरी की। इसके साथ-साथ वे अविरत साहित्य सृजन करते रहे। साथ ही सन् 1942 में अज्ञेय जी ने दिल्ली में अखिल भारतीय फासिस्ट विरोधी संमेलन का आयोजन किया तथा सन 1943 में वे सेना में दाखील हुए। वे कैप्टन के रूप में आसाम-बर्मा फ्रंट पर नियुक्त हुए और सन् 1946 में उन्हें सेना से सेवा मुक्ति मिली।

1.1.5 वैवाहिक जीवन :-

अज्ञेय जी ने जुलाई, 1940 में `संतोष` के साथ सिविल मैरिज की पर कुछ ही दिनों के उपरांत उनका संबंध विच्छेद हो गया। 7 जुलाई, 1956 में उनका दूसरा विवाह `कपिला मलिक` से हुआ और उन्होंने प्रयाग में एक घर लेकर प्रवेश किया पर उसी वर्ष की शरत ऋतु में कुल्लू और अल्मोड़ा के भ्रमण में निकले। इसप्रकार अज्ञेय जी का वैवाहिक जीवन कुछ खास नहीं रहा। परंतु अज्ञेय के अंतिम दिनों में उनकी पत्नी ने उनकी खूब सेवा की। प्रस्तुत विवरण देते हुए डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र लिखते हैं ------- अगस्त, 1957 में वे जापान और फिलीपीन की यात्रा पर रवाना हुए तथा अप्रैल, 1958 में स्वदेश लौटने पर सन 1960 तक दिल्ली में निवास करते रहे। बीच-बीच में स्वदेश वापसी को अंतराल देकर अज्ञेय जुलाई, 1964 तक वही रहें और जुलाई, 1964 में स्वदेश लौटते ही अस्वस्थ हो गये तथा कई महिनों उन्हें अस्पताल में दुखद कष्ट झेलने पडे लेकिन कपिला जी की सेवा और उनके अपने निजी विश्वास ने स्वास्थ्य लौटाया, पर सतर्कता की एक बंदिश बाँध दी।``[4]

1.1.6 पुरस्कार एवं मान-सम्मान :-

अज्ञेय जी को बहुत से मान-सम्मानों से विभूषित किया है। साहित्य अकादमी ने उन्हें 1964 में प्रकाशित `आँगन के पार द्वार` कविता संग्रह के लिए 1965 में पाँच हजार रूपये का प्रथम पुरस्कार घोषित कर उन्हें सम्मानित किया। जनवरी, 1967 में ऑस्ट्रेलिया में `एशियाई देशों में साहित्य विनियम` शीर्षक विषय पर संगोष्ठी आयोजित हुई जिसमें उन्होंने भारतीय प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। सन 1967 में ही `अज्ञेय` का पहला नाटक `उत्तर प्रियदर्शी` रंगमंच पर खेला गया। सन 1971 में विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन (म. प्रदेश) ने उन्हें डी.लिट. की मानद उपाधि प्रदान की। हिंदी साहित्य संमेलन प्रयाग में उन्हें वाचस्पति की उपाधि से संमानित किया। सन् 1972 में उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य संमेलन ने उन्हें `विद्यावारिधि` उपाधि प्रदान की और `कितनी नावों में कितनी बार` इस रचना पर उन्हें सन् 1978 में `भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार` से सम्मानित किया गया।

1.1.7 मृत्यु :-

अज्ञेय जी ने अपने जीवन में कड़ा संघर्ष किया है। वे अपनी अनुभूतियों की वजह से तपकर निखर गए थे। क्रांतिकारी जीवन में एक बार चंबा में रावी के पुल पर से छलांग लगाने से घुटने की टोपी उतर गयी, जिसका दर्द उन्हें जीवनांत तक सताता रहा। ऐसे बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार का देहांत 4 अप्रैल, 1987 ई. को हुआ।

1.2 व्यक्तित्व :-

सशक्त क्रांतिकारी, घुमक्कड़, संपादक आदि अनेकविध व्यक्तित्व के पहेलू अज्ञेय जी के व्यक्तित्व में परिलक्षित होते हैं।

1.2.1 क्रांतिकारक : अज्ञेय :-

जन्मजात विद्रोही अज्ञेय आगे चलकर क्रांतिकार के रूप में हमारे सामने आते हैं। उनके इस रूप से उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा था। सन 1929 में इन्होंने एम. ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया पर

लाहौर में उनके क्रांतिकारक जीवन का श्रीगणेश हुआ और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी के सदस्य बनने पर आजाद, सुखदेव, भगवतीचरण वोहरा आदि से परिचय हुआ। इस प्रकार लगभग पाँच वर्षों तक अज्ञेय ने क्रांतिकारक जीवन बिताया। `क्रांतिकारक अज्ञेय' के संदर्भ में श्री. श्रीनिवास मिश्र कहते हैं - ``1930 में भगतसिंह को छुड़ाने का प्रयत्न भगवतीचरण वोहरा के एक दुर्घटना में शहीद हो जाने के कारण स्थगित हुआ। दिल्ली में हिमालयन टॉयलेट्स फैक्ट्री में बम बनाने का कार्य क्रांतिकारी मित्रों के साथ प्रारंभ किया, जिसकी इति अमृतसर में ऐसी ही फैक्ट्री कायम करने के सिलसिले में 15 नवंबर, 1930 को गिरफ्तारी के रुप में हुई। एक महीना लाहौर किले में, तदुपरांत अमृतसर की हवालात में। 1931 में दिल्ली में भी मुकदमा चला जो 1933 तक चला। दिल्ली जेल में काल कोठरी में बंदी के रूप में। ----1934 फरवरी में छूटे, परंतु फिर लाहौर में नजरबंदी कानून के अंतर्गत नजरबंद। 1935 के मध्य में अपने ही घर में नजरबंद।``[5] नजरबंदी हटने तक इन्हें डलहौजी और लाहौर में ही रहना पड़ा। सात साल उन्हें इस तरह से क्रांतिकारक के रूप में काटना पड़ा। इसप्रकार अज्ञेय जी का क्रांतिकारी रूप हमारे सामने आता है।

1.2.2 घुम्मकड़ : अज्ञेय :-

अज्ञेय जी ने अपने जीवनकाल में देश-विदेश की अनेक यात्राएँ की। इन्हीं यात्राओं से उनमें धैर्य बढ़ा। सन् 1952 से 1955 तक अज्ञेय जी ने भारत की यात्रा कई बार की। विशेष रूप से कालतिथों में ये अपनी दृष्टि और फोटोग्राफी एक साथ माँजते रहे। दक्षिण भारत को इन्होंने बचपन के बाद फिर नई समग्र दृष्टि से देखा और अपने चित्र को भारतीय संस्कार की मूर्त अभिव्यंजना से परिस्कृत किया। सन् 1955 में युनेस्को के निमंत्रण पर पश्चिमी युरोप की यात्रा की, इस यात्रा से कई रचनाओं के निर्माण की प्रेरणा उन्हें मिल गई। अगस्त, 1957 में जापान और फिलिपिन की यात्रा की। स्वदेश लौटने पर सन 1960 तक दिल्ली में रहे। अप्रैल 1960 में दूसरी बार युरोप की यात्रा की। 1961 के सितंबर में अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में `भारतीय संस्कृति और साहित्य' के अध्यापक बनकर गये। जुलाई, 1964 में स्वदेश लौटते ही वे अस्वस्थ हो गये। उन्हें दिल का दौरा पड़ा। इस बीमारी के बाद वे पहले की अपेक्षा दुख का आघात सहने में अधिक समर्थ बने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहे और धैर्यशील बने। इससे अज्ञेय जी का घुम्मकड व्यक्तित्व हमारे सामने आता है। साथ ही वे अपनी यात्राओं में रूमानियाँ, युगोस्लाव्हिया, रूस और मंगोलिया भी गये। युगोस्लाव्हियाँ में नोबेल पुरस्कार विजेता स्लोवेनी कवि मार्तइ

बीर से मिले। वहाँ उन्होंने हिंदी कविता और उपन्यास के युगोस्लाव्ह अनुवाद तथा युगोस्लाव्ह कविता और उपन्यास के हिंदी अनुवाद की योजना बनाई। सन् 1966 में ही विदेश से लौटने पर अज्ञेय ने बिकानेर, अजमेर, सिमला, दिल्ली और एनीकुलम के आयोजनों में भाग लिया और समस्त भारतीय आधुनिक हिंदी साहित्य के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए।

1.2.3 संपादक : अज्ञेय :-

साहित्य सृजन के साथ-साथ अज्ञेय ने संपादन कार्य भी विपुल मात्रा में किया है। उन्होंने संपादन के रूप में अपनी अलग पहचान रखी है। उन्होंने जो संपादन कार्य किया उनमें सन 1936 ई. से लेकर कुछ समय तक वे आगरा के समाचार पत्र `सैनिक` के संपादकीय विभाग में काम करते रहे। सन 1937 ई. में बनारसीदास चतुर्वेदी के आग्रह पर `विशाल भारत` कलकत्ता के संपादकीय विभाग में काम करने लगे। सन् 1947 से इलाहाबाद से `प्रतीक` का प्रकाशन करने लगे। उन्होंने `प्रतीक` के माध्यम से कला, संस्कृति और साहित्य के अंतरावलंबन का एक सर्वांगीण संदेश रखा। प्रतीक का दायरा बहुत ही विस्तृत था और आगे चलकर जो भी नई पीढ़ी के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं, उनमें अधिकांश की प्रतिभा का उन्मीलन प्रतीक में हुआ। प्रतीक के संपादन में अज्ञेय ने अपना सब कुछ दाँव पर लगाया और उसमें इतनी आर्थिक हानि सही कि उस हानि को पूरा करने के लिए उन्हें 1963 तक कठोर परिश्रम करना पड़ा। इससे उनके संयमी एवं परिश्रमी वृत्ति का परिचय मिलता है। 1950 में प्रतीक के ही लिए इन्होंने दिल्ली में रेडिओ की नौकरी स्वीकार की, और दो वर्ष तक इन्होंने अपने बूते पर पत्र को चलाया। 1952 तक प्रतीक चलता रहा और उसका स्तर कभी गिरा नहीं। प्रतीक का बंद होना नये साहित्य की स्वीकृति की दृष्टि से एक विडंबनापूर्ण घटना थी। इस प्रकार अज्ञेय विविध रूपों के साथ-साथ संपादक के रूप में भी हमारे सामने आते हैं।

1.3 कृतित्व :-

अज्ञेय जी प्रतिभा संपन्न एवं विविधमुखी रचनाकार है। उनका गद्य एवं पद्य पर समान अधिकार था। उन्होंने उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, एकांकी आदि विविध साहित्यिक विधाओं में लेखन किया है।

1.3.1 उपन्यास :-

1. शेखर : एक जीवनी, भाग-1 (1941)
2. शेखर : एक जीवनी, भाग-2 (1944)
3. नदी के द्वीप (1951)

1.3.2 कहानी :-

1. विपथगा (1937)
2. परंपरा (1944)
3. कोठरी की बात (1945)
4. शरणार्थी (1947)
5. जयदोल (1951)
6. अमरवल्ली और अन्य कहानियाँ (1954)
7. कड़ियाँ और अन्य कहानियाँ (1957)
8. अज्ञेय की कहानियाँ, भाग- 3 (1961)
9. अज्ञेय की कहानियाँ, भाग-4 (1961)
10. ये तेरे प्रतिरूप (1961)
11. लौटती पगडंडियाँ (1975)
12. छोड़ा हुआ रास्ता (1975)

1.3.3 काव्य :-

1. भग्नदूत (1933)
2. चिंता (1941)
3. इत्यलम् (1946)
4. हरी घास पर क्षण भर (1949)
5. बावरा अहेरी (1954)
6. इंद्रधनुष रौंदे हुए ये (1957)
7. अरी ओ करूणा प्रभामय (1959)
8. आँगन के पार द्वार (1961)
9. पूर्वा (1965)
10. सुनहले शैवाल (1966)
11. कितनी नावों में कितनी बार (1967)
12. क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1970)
13. सागर मुद्रा (1970)
14. पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1974)
15. महावृक्ष के नीचे (1977)

संपादित काव्य संग्रह :-

16. तारसप्तक (1943)

17. दूसरा सप्तक (1951)

18. पुष्करिणी (1959)

19. तीसरा सप्तक (1959)

20. रूपांबरा (1960)

21. चौथा सप्तक (1979)

1.3.4 नाटक :-

नए एकांकी (संपादित) (1952)

उत्तर प्रियदर्शी (नाटक काव्य) (1967)

1.3.5 निबंध एवं विचारात्मक गद्य :-

1. त्रिशंकु (1945)
2. सबरंग (1956)
3. आत्मनेपद (1960)
4. आधुनिक हिंदी साहित्य (1965)
5. सबरंग और कुछ राग (1966)
6. हिंदी साहित्य का आधुनिक परिदृश्य (1967)

7. आलवाल (1971)

8. लिखि कागद कोरे (1972)

9. भवंती (1972)

10. अंतरा (1975)

11. जोगलिखी (1977)

12. अदयतन (1977)

13. संवत्सर (1978)

14. स्रोत और सेतु (1978)

1.3.6 यात्रा वर्णन :-

1. अरे यायावर रहेगा याद (1953)

2. एक बूँद सहसा उछली (1961)

1.3.7 पत्रकारिता :-

1. सैनिक (साप्ताहिक) (1936-37)

2. विशाल भारत (मासिक) (1937-39)

3. भारती (मासिक) (1941)

4. प्रतीक (मासिक) (1947-52)

5. वाक्, (त्रैमासिक) (1950)

6. दिनमान (साप्ताहिक) (1965)

7. नया प्रतीक (मासिक) (1974)

8. नवभारत टाइम्स, (दैनिक) (1977)

1.3.8 अँग्रेजी लेखन :-

1. श्रीकांत (शरतचंद्र के मूल बंगला उपन्यास का अनुवाद) (1944)

2. द रेजिग्नेशन (जैनेंद्रकुमार के उपन्यास `त्यागपत्र` का अनुवाद) (1946)

3. प्रिजन डेज एंड अदर पोयम्स (काव्य संग्रह)(1946)

इसप्रकार अज्ञेय जी का कृतित्व स्पष्ट होता हैं।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन एवं विवेचन विश्लेषण के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वे यहाँ पर दर्ज हैं ----

अज्ञेय जी हिंदी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभासंपन्न सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं। इनका एक साथ कई विधाओं पर समान अधिकार रहा है। अज्ञेय हमेशा विवाद का विषय रहे हैं। उनके जन्मस्थान का उनपर काफी प्रभाव दिखायी देता है। पिता सरकारी नौकरी में होने के कारण उन्हें उनके साथ हमेशा एक गाँव से दूसरे गाँव घूमना पड़ा। नौकरी, शिक्षा-दीक्षा के साथ-साथ इन्होंने कुछ मात्रा में घर-गृहस्थी में भी दखलांदाजी की है। अज्ञेय को अनेक पुरस्कारों एवं मान-सम्मानों से विभूषित किया है। अज्ञेय का क्रांतिकारक, घुमक्कड, संपादक रूप में व्यक्तित्व उभर आया है। अंत में अज्ञेय जी के कृतित्व की चर्चा की है। उन्होंने अपने अनुभव तथा जीवन ही लेखन के विषय बनाएँ हैं। जिससे उन्हें कई मान-सम्मानों से पुरस्कृत किया गया है।

: संदर्भ -सूची :

1. अज्ञेय - शेखर :एक जीवनी, भाग-1, पृष्ठ.9

2. वही, पृष्ठ. 48

3. वही, पृष्ठ. 53

4. डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र- अज्ञेय का काव्य : एक विश्लेषण, पृष्ठ. 7, 8

5. वही, पृष्ठ. 6

****